

## बौद्ध दर्शन के 'आष्टांगिक-मार्ग' का आलोचनात्मक मूल्यांकन व प्रासंगिकता (वर्तमान परिपेक्ष्य में)

नविन्द्रा बाई

शोध.सार

यह शोध लेख वर्तमान परिपेक्ष्य में बौद्ध दर्शन के 'आष्टांगिक-मार्ग' का आलोचनात्मक मूल्यांकन व प्रासंगिकता का एक अध्ययन प्रस्तुत करता है। व्यसन की प्रवृत्ति, चोरी, धोखा, स्वार्थ की भावना, कट्टरता, हिंसा, डकैती, झूठ आदि समस्यायें समाज में निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इन ज्वलंत समस्याओं से जूझती रुग्ण मानवता के लिये महात्मा बुद्ध के उन उपदेशों की महती आवश्यकता है जो अनिश्चितता के भंवर में फंसे मानव जगत की रक्षा कर सके। महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'आष्टांगिक-मार्ग' उपर्युक्त समस्याओं के निराकरण का मार्ग प्रशस्त करता है जो संसार के दुःखों को दूर करके विश्व में भ्रातृत्व, सहयोग व प्रेम की भावना को विकसित करता है।

मुख्य बिन्दू— बौद्ध दर्शन, आष्टांगिक-मार्ग, चार आर्यसत्य, प्रज्ञा, शील और समाधि ।

**प्रस्तावना :** वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व आक्रांत एवं भयभीत है। चतुर्दिक में सामाजिक बुराईयों ने अपना जाल बिछाया हुआ है। प्रत्येक राष्ट्र आतंकवाद के विभिन्न रूपों से त्रस्त है। धर्म के नाम पर भोले-भोले लोगों को आतंकवादी संगठनों में सम्मिलित किया जाता है और फिर उनका आतंकवाद फैलाने में इस्तेमाल किया जाता है। व्यसन की प्रवृत्ति, चोरी, धोखा, स्वार्थ की भावना, कट्टरता, हिंसा, डकैती, झूठ आदि समस्यायें समाज में निरंतर बढ़ती जा रही हैं तथा सम्पूर्ण मानव जाति को दुःखों के जाल में फंसाती जा रही है। इन ज्वलंत समस्याओं से जूझती रुग्ण मानवता के लिये महात्मा बुद्ध के उन उपदेशों की महती आवश्यकता है जो अनिश्चितता के भंवर में फंसे मानव जगत की रक्षा कर सके। तात्कालिक परिवेश में जिनमें महात्मा बुद्ध की उत्पत्ति एवं अभ्युदय हुआ था, इनके विचारों की

उपादेयता निःसंदेह महत्वपूर्ण थी, परन्तु यदि हम सूक्ष्म अवलोकन करें, तो इनके उपदेश वर्तमान संदर्भ में भी उतने ही प्रासंगिक है।<sup>1</sup>

महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'आष्टांगिक-मार्ग' उपर्युक्त समस्याओं के निराकरण का मार्ग प्रशस्त करता है जो संसार के दुःखों को दूर करके विश्व में भ्रातृत्व, सहयोग व प्रेम की भावना को विकसित करता है। इसलिए मानव जाति के दुःखों को दूर करने के लिए भगवान् महात्मा बुद्ध द्वारा दिए गये 'आष्टांगिक-मार्ग' का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। मनुष्य को दुःख तब होता है, जब उसे सही ज्ञान नहीं होता और 'आष्टांगिक-मार्ग' का पहला मार्ग 'सम्यक्-दृष्टि' अर्थात् सही-सही जान लेना ही है। महात्माबुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति हेतु असाध्य पीड़ादायी साधना को छोड़ते हुए मध्यम-मार्ग को उपयोगी बताया। यह मार्ग भौतिकवाद व सुखवाद युक्त संसार में अधिक उपयोगी साबित हो सकता है। इसलिए इस विषय का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। इस शोधलेखके माध्यम से 'आष्टांगिक-मार्ग' के महत्त्व को वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

महात्मा बुद्ध ने मानव के दुःखों के कारणों की खोज की तथा उसके निवारण के लिए जन्म-मरण के सागर से पार जाने का मार्ग दिखाया। इसे उन्होंने चार आर्यसत्य के रूप में अभिव्यक्त किया।

### चार आर्यसत्य

1.सर्व-दुःखम् 2.दुःख-समुदय 3.दुःख-निरोध 4.दुःख निरोध गामिनी प्रतिपद  
चतुर्थ आर्यसत्य के रूप में महात्मा बुद्ध ने दुःख निरोध का मार्ग बताया। इसे 'आष्टांगिक-मार्ग' या मध्यम-मार्ग कहा जाता है। यह नैतिक और आध्यात्मिक साधना का मार्ग है। इस मार्ग पर चलकर साधक समस्त दुःखों का मूलतः उच्छेद कर पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है।<sup>2</sup>

'आष्टांगिक-मार्ग' का फल 'निर्वाण' है और उसका स्वरूप 'तृष्णा का निरोध एवं भवचक्र का छेदन' है। निर्वाण का शाब्दिक अर्थ है 'बुझ जाना' अर्थात् तृष्णा रूपी अग्नि का बुझ जाना, क्षय हो जाना, यही परम पद है। जो सुख चाहता है उसके लिए तृष्णा के निरोध के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। तृष्णा के निरोध का उपाय ही मध्यम प्रतिपदा कहलाता है।<sup>3</sup>

तृष्णा के अन्त के लिए मनुष्य त्रि-शरण (प्रज्ञा, शील और समाधि) को ग्रहण करे और मध्यम प्रतिपदा पर आरुढ़ हो, यही महात्मा बुद्ध की शिक्षा है। प्रज्ञा के बिना शील नहीं और शील के बिना समाधि नहीं, ये परस्पर पूरक हैं। यहाँ 'शील' का अभिप्राय मन, वचन और शरीर से अहिंसा एवं सत्यपूर्वक सदाचार का आचरण करना। 'प्रज्ञा' का अभिप्राय परम सत्यों का साक्षात्कार और 'समाधि' से तात्पर्य चित्त का समाधान, परमशांति, तृष्णा का अंत है। 'आष्टांगिक-मार्ग' का पालन करने

\* (शोध.छात्रा) दर्शन विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

से प्रज्ञा का उदय होता है, मनुष्य शील पर आरूढ़ हो जाता है और तृष्णा के शांत हो जाने से समाधि का लाभ प्राप्त करता है। अतः ‘आष्टांगिक-मार्ग’ के आठ अंगों को भलीभांति जानकर उसमें रत हो जाना ही उत्तम जीवन चर्या है।<sup>14</sup> संक्षेप में, आष्टांगिक मार्ग के इन आठ अंगों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है:-

**1.सम्यक्-दृष्टि (दर्शन) :** अभिधम्मपिटक में चार आर्यसत्य के ज्ञान को सम्यक् दृष्टि कहा गया है। सत्य का यथावत् ज्ञान होना सम्यक् दृष्टि (दर्शन) कहलाता है। सम्यक् दृष्टि से अभिप्राय यथार्थ रीति से दुःख, दुःख समुदय, दुखनिरोध और दुःख निरोध प्रतिपद को देखना है। वास्तविक को जानना ही सम्यक्-दृष्टि है।<sup>15</sup>

**2.सम्यक्-संकल्प :** सम्यक्-संकल्प से अभिप्राय है उचित निश्चय या निर्णय। कलुषित विचारों को जानते रहने से जब मन इनसे विरक्त हो जाता है, तब सम्यक् संकल्प होता है। इस प्रकार सम्यक् संकल्प का अर्थ है मन, वचन और कर्म से संसार त्याग और द्रोह, घृणा, द्वेष, दुराव एवं हिंसा से विरक्त हो जाना। दृढ़ विश्वास से युक्त संकल्प ही सम्यक्-संकल्प है।<sup>16</sup>

**3.सम्यक्-वाक् (वचन) :** वाणी का सत्य, शांत, विनम्र एवं मधुर होना, हित, मित और प्रिय होना सम्यक् वाक् है। झूठे बोलने, चुगली करने, कठोर वचन और व्यर्थ बकवास आदि से विरत रहना ही सम्यक्-वाक् है।<sup>17</sup>

**4.सम्यक्-कर्मान्त :** मन-वचन-काय पूर्वक होने वाला आचरण कर्मान्त है। महात्माबुद्ध के अनुसार प्राणियों की हिंसा, चोरी व व्याभिचार से विरत रहना सम्यक् कर्मान्त कहलाता है। कोई ऐसा कार्य न करना जो दूसरे व्यक्ति को दुःख पहुंचाए, कुशल कर्मों को करना और अकुशल कर्मों का त्याग ही सम्यक्-कर्मान्त है।<sup>18</sup>

**5.सम्यक्-आजीविका :** अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य का पालन तथा व्यसन का सेवन न करना पंचशील है। इन पंचशील का पालन करते हुए जिविकोपार्जन करना आजीविका का सम्यक् रूप है अर्थात् किसी ऐसे तरीके से आजीविका नहीं चलानी चाहिये जो किसी अन्य प्राणियों के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दुःखदायी हो। बेईमानी का त्याग करके ईमानदारी से आजीविका करना ही सम्यक्-आजीविका है।<sup>19</sup>

**6.सम्यक्-व्यायाम :** सम्यक् व्यायाम से अभिप्राय है उचित कर्मठता अथवा परिश्रम। गलत और पीड़ादायी विचारों, शब्दों और कार्यों को त्यागना ही सम्यक् व्यायाम है। चित्त की अकुशल प्रवृत्तियों एवं धर्मों का दृढ़ होकर निरंतर त्याग करना, कुशल कर्मों व धर्मों को उत्पन्न करना, कुशल धर्मों की इच्छा जगाना तथा चित्त को अमृत पद की प्राप्ति में लगायें रखना सम्यक् व्यायाम है।<sup>20</sup>

**7.सम्यक्-स्मृति :** अपने मन, शरीर, कार्यों व वेदना के प्रति निरन्तर एकाग्र एवं सजग होना सम्यक्-स्मृति है। प्रिय के प्रति राग व अप्रिय के प्रति द्वेष रहित होकर इस लोक में (मन-वचन-काय) उत्पन्न होने वाले धर्मों की विपश्यना करना और

असावधान न होना ही सम्यक् स्मृति है। इस शरीर रूपी लोक में राग-द्वेष रहित होकर श्रमशील, स्मृतिमान एवं सम्प्रज्ञानी बन कयानुपश्यना, वेदानुपश्यना, चितानुपश्यना तथा धर्मानुपश्यना करते हुए आष्टांगिक मार्ग का पालन करना है। इसलिए तृष्णा और आसक्ति रहित होकर सम्यक्-स्मृति पूर्वक विपश्यना, विवेक एवं सतत जागृत होकर अपने लोक के प्रति अपने को तथा अनुपश्यना की चार भावनाओं को जागृत रखना ही सम्यक् स्मृति है।<sup>21</sup>

**8.सम्यक्-समाधि :** समाधि का अर्थ है चित्त का एकाग्र हो जाना। तृष्णा, काम-वासना, अकुशल धर्मों व कर्मों का पृथक् होकर काया व चित्त का विशुद्ध हो जाना सम्यक्-समाधि है। कुशल चित्त की एकाग्रता ही समाधि कहलाती है। ‘सम्यक्-समाधि’ चार चरणों में उदित होती है, जिन्हें ध्यान कहा जाता है। ये निम्न हैं:-

**प्रथम-ध्यान :** वितर्क, विचार, प्रीति, सुख एवं एकाग्रता से युक्त चित्त ध्यान की प्रथम स्थिति है। यहाँ वितर्क व विचार के शांत होने पर द्वितीय ध्यान का उदय होता है।

**द्वितीय-ध्यान :** प्रीति, सुख एवं एकाग्रता से युक्त चित्त ध्यान की द्वितीय स्थिति है। यहाँ प्रीति से मुक्त होकर उपेक्षा, स्मृति व सम्प्रज्ञान से युक्त होने पर तृतीय ध्यान का उदय होता है।

**तृतीय ध्यान :** सुख, ध्यान, स्मृति एवं एकाग्रता से युक्त चित्त ध्यान की तृतीय स्थिति है। यहाँ सुख का परिहार होकर स्मृति की शुद्धि हो जाती है और चतुर्थ ध्यान का उदय होता है।

**चतुर्थ-ध्यान :** उपेक्षा, स्मृति एवं एकाग्रता पूर्वक विशुद्ध चित्त की इस चतुर्थ ध्यान की अवस्था को ही समाधि कहा गया है। काय व चित्त के विशुद्ध और समाहित हो जाने पर प्रज्ञा की उत्पत्ति होती है यही अंतिम अवस्था ‘सम्यक् समाधि’ है।<sup>22</sup>

**भारतीय दर्शन के साथ तुलनात्मक अध्ययन :** बौद्ध दर्शन में कहा गया है कि आष्टांगिक मार्ग का पालन करके निर्वाण की प्राप्ति की जा सकती है जबकि जैन दर्शन में बताया गया कि त्रिरत्न (सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान, सम्यक्-आचरण) का अनुसरण करते हुए मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। वैदिक दर्शन में भक्ति योग, ज्ञान योग, कर्म योग व राज योग के चार मार्ग बताये गये हैं जिनमें से किसी भी एक योग का पालन करते हुए मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। वैदिक दर्शन में वेदों व पुराणों को सत्य माना है तथा उन्हीं के अनुसार दैनिक कार्यों को निष्पादित करने पर बल दिया है। जबकि बौद्ध दर्शन में स्वयं महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को कहा है कि मेरी कही गई बात को भी तब तक सत्य मत मानो जब तक तुम स्वयं उसका तर्क व विवेक से परीक्षण न कर लो।<sup>23</sup>

बौद्ध दर्शन में मोक्ष की प्राप्ति हेतु आष्टांगिक मार्ग को अनिवार्य बताया है जबकि जैन दर्शन में त्रिरत्न को। जैन दर्शन में सम्यक आचरण के लिए पंच महाव्रत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य) का पालन करना जरूरी है, जबकि बौद्ध दर्शन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य आष्टांगिक मार्ग में ही निहित है। जैन दर्शन में अहिंसा को बहुत अधिक कठोर रूप से प्रस्तुत किया गया है। जैन दर्शन के अनुयायियों को कृषि करने के लिए भी मनाही की गई है क्योंकि उनका मानना है कि इससे जीवों की हत्या होती है।<sup>14</sup> जबकि महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं में अहिंसा को व्यावहारिक रूप तक पालन करने पर बल दिया है। बौद्ध दर्शन में बौद्ध भिक्षुओं को कठोर सिद्धान्तों का पालन करने पर बल दिया है, जबकि ग्रहस्थ को मध्यम मार्ग का पालन करने के लिए कहा है क्योंकि स्वयं भगवान महात्मा बुद्ध का मत था कि यदि सभी भिक्षु बन जायेंगे तो सृष्टि का सन्तुलन ही बिगड़ जायेगा। बौद्ध दर्शन सम्पूर्ण मानव-जगत के कल्याण को महत्व देता है तथा अधिक व्यावहारिक है जबकि जैन दर्शन की शिक्षाएँ पूर्णतः व्यावहारिक नहीं हैं।

वैदिक दर्शन व बौद्ध दर्शन दोनों में ही बताया है कि गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। बौद्ध दर्शन में जीव को अति दुःसाध्य मार्ग को छोड़कर मध्यम मार्ग का अनुपालन करने के लिए कहा गया है तो गीता में भी कहा गया है कि मनुष्य लौकिक जीवन व्यतीत करते हुए कर्म योग और राजयोग के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। बौद्ध दर्शन में सम्यक् कर्म को मोक्ष प्राप्ति का एक चरण बताया गया है तो भगवद्गीता में भी कहा गया है कि फल की इच्छा न करते हुए कर्म करो इससे जीवन के सुख-दुःख स्वतः ही कम हो जायेगा। सभी भारतीय दर्शन अविद्या अर्थात् अज्ञानता को दुःखों का मूल कारण बताते हैं। बौद्ध दर्शन भी कहता है कि सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति से दुःखों का अंत हो सकता है।<sup>15</sup>

भारतीय वैदिक दर्शन में कहा है कि मनुष्य का इन्द्रिय सुख ही दुःखों का कारण है, इन्द्रियों पर नियंत्रण करके मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है तथा राग द्वेष की भावना से ऊपर उठ कर ही पुनर्जन्म, पीड़ा व दुःखों से मुक्ति मिल सकती है। इन्द्रियों पर नियंत्रण, तपस्या, ध्यान, समाधि तथा फल की इच्छा न करते हुए कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है।<sup>16</sup> उसी प्रकार बौद्ध दर्शन में भी समस्त दुःखों का कारण तृष्णा को बताया गया है और कहा गया है कि तृष्णा पर नियंत्रण ‘आष्टांगिक-मार्ग’ के द्वारा किया जा सकता है। तृष्णा ही पुनर्जन्म का कारण है। तृष्णा के कारण प्रतीत्यसमुत्पन्न सृष्टि का चक्र गतिशील रहता है। भगवान महात्मा बुद्ध ने कहा है कि तृष्णा का निरोध ‘आष्टांगिक मार्ग’ से ही संभव

है अर्थात् बौद्ध दर्शन में पुनर्जन्म या सांसारिक दुःखों से मुक्ति तथा ज्ञान की प्राप्ति का द्वार ‘आष्टांगिक-मार्ग’ है। ‘सम्यक्-दृष्टि’ से होते हुए ‘सम्यक्-समाधि’ तक पहुँचकर मनुष्य निर्वाण की प्राप्ति कर सकता है। वैदिक दर्शन में समाधि को मोक्ष प्राप्ति का अंतिम चरण बताया है और बौद्ध दर्शन में भी सम्यक्-समाधि निर्वाण प्राप्ति हेतु ‘आष्टांगिक मार्ग’ का अंतिम चरण है।

जैन व बौद्ध दर्शन के निर्वाण या मोक्ष प्राप्ति के साधन अलग-अलग हो सकते हैं परन्तु अंतिम लक्ष्य एक ही है। दोनों दर्शनों में व्यक्ति को अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करने के लिए कहा गया है। जैन दर्शन में त्रिरत्न की अवधारणा (सम्यक् दर्शन, सम्यक्-ज्ञान, सम्यक्-आचरण) बौद्ध दर्शन के प्रज्ञा, शील व समाधि के समकक्ष है। जैन दर्शन में सम्यक्-आचरण हेतु पंच महाव्रत का पालन करना जरूरी है, उसी प्रकार बौद्ध दर्शन में शील के अंतर्गत सम्यक्-वाक्, सम्यक्-कर्म एवम् सम्यक्-आजीविका है जो जैन दर्शन के पांच महाव्रत के समान ही प्रतीत होते हैं। जैन दर्शन के सम्यक्-दर्शन और सम्यक्-ज्ञान से अभिप्राय क्रमशः जीवन को श्रद्धामय बनाना, पदार्थों के सही स्वरूप को समझना है अर्थात् प्रकृति को यथार्थ रूप में जानना तथा सच्चे ज्ञान की प्राप्ति करना है और ‘आष्टांगिक-मार्ग’ के प्रज्ञा (सम्यक्-दृष्टि, सम्यक्-संकल्प) से भी आर्यसत्त्यों का साक्षात्कार करना है। बौद्ध दर्शन के सम्यक्-वाक्, सम्यक्-कर्म, सम्यक्-आजीविका, सम्यक्-व्यायाम, सम्यक्-स्मृति, सम्यक्-समाधि जैन दर्शन के सम्यक्-चरित्र के समकक्ष है। बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ प्रज्ञा, शील व समाधि में तथा जैन दर्शन त्रिरत्न (सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान, सम्यक्-आचरण) में विभाजित है। बौद्ध दर्शन का प्रज्ञा जैन दर्शन के सम्यक्-दर्शन व सम्यक्-ज्ञान के समान है, शील व्यावहारिक सम्यक्-चरित्र तथा समाधि यथार्थ सम्यक् चरित्र के समान है।<sup>17</sup> जैन दर्शन के पंचमहाव्रत में सर्वप्रथम अहिंसा है जो किसी भी जीव को पीड़ा पहुँचाने की मनाही करता है। उसी के समान बौद्ध दर्शन के ‘आष्टांगिक मार्ग’ का सम्यक्-कर्मान्त है जो ऐसे किसी भी कार्य को करने से रोकता है जिससे किसी प्राणी को पीड़ा होती हो। जैन दर्शन में दूसरा महाव्रत सत्य है जो बौद्ध दर्शन के सम्यक्-वाक् के समान है। ‘अपरिग्रह’ सम्यक्-आजीविका के समान है। उसी प्रकार कहीं न कहीं ‘अस्तेय’ व ‘ब्रह्मचर्य’ भी सम्यक्-व्यायाम, सम्यक्-स्मृति व सम्यक्-समाधि से जुड़े हुए हैं। उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि बौद्ध दर्शन का निर्वाण प्राप्ति का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ जैन दर्शन के निर्वाण प्राप्ति के त्रिरत्न मार्ग से पूर्णतः सहमत हैं।

#### आलोचनात्मक मूल्यांकन

बौद्ध दर्शन पर यह आक्षेप लगाया गया कि यह दर्शन केवल व्यक्ति के

संदर्भ में ही प्रासंगिक है, किसी राष्ट्र के संदर्भ में नहीं। बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक मार्ग’ केवल यही बताता है कि व्यक्ति को किस मार्ग पर चलना चाहिए और किस पर नहीं? यह मार्ग राष्ट्र को कैसे खुशहाल बनाएं, कैसे लोगों के दुखों को दूर करे, किस प्रकार की शासनप्रणाली हो, इसके बारे में स्पष्ट रूप से नहीं बताता।<sup>18</sup> परन्तु यहां यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि जब एक राष्ट्र के व्यक्ति सदाचार का पालन करें तथा अपने जीवन में ‘आष्टांगिक-मार्ग’ को अपनाएं मुख्यतः सम्यक्-आजीविका को धारण करें (हथियार निर्माण का कार्य न करें) तो राष्ट्रों की प्रबल आकांक्षा “एको अहं द्वितीयो नास्ति” स्वतः ही खत्म हो जायेगी। इसका स्पष्ट उदाहरण है – महान् सम्राट अशोक के द्वारा कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध दर्शन के नियमों (धम्म) को ग्रहण करना और धम्म का प्रचार-प्रसार करना। भारत में लोकतंत्र की स्थापना में भी महात्माबुद्ध की शिक्षाओं का अहम् योगदान है। भारतीय संविधान में राज्य के नीति-निर्देशक तत्व तथा समानता व स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार बौद्ध दर्शन के संघ के नियमों से ही प्रेरित होते हैं।<sup>19</sup>

कुछ विद्वानों ने यह भी आरोप लगाया है कि बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ के नियम भारतीय वैदिक दर्शन में पहले से ही वर्णित थे, इन्होंने कुछ नया सिद्धांत नहीं दिया। वेदों में भी चोरी, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य एवं समाधि आदि के बारे में उल्लेख किया गया है तथा स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा व धार्मिक अनुष्ठानों के अधिकार दिए गये हैं, परन्तु यह भी उल्लेखनीय है कि तात्कालिक समाज में जाति-प्रथा व ऊँच-नीच की भावना व्याप्त थी तथा कुछ विशेष वर्गों या जाति के लोगों को ही शिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान, उपासना व ज्ञान प्राप्ति के अधिकार प्राप्त थे। उस समय में भगवान महात्मा बुद्ध ने सभी जातियों, वर्गों व स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से मोक्ष का मार्ग खोला तथा कहा कि कोई भी व्यक्ति ‘आष्टांगिक-मार्ग’ का पालन करके दुःखों से मुक्ति पा सकता है। अतः यह कहना की बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ में कुछ नया नहीं, अपितु वैदिक परम्परा की ही देन है, उचित नहीं होगा।<sup>20</sup>

कुछ भौतिकवादी विद्वानों ने भी यह आरोप लगाया कि भगवान महात्मा बुद्ध का ‘आष्टांगिक मार्ग’ तृष्णा के निरोध पर बल देता है। उनका कहना है कि जब व्यक्ति की इच्छाएं ही नष्ट हो जायेगी तो वह स्वयं में एक कब्र बन जायेगा।<sup>21</sup> वह जीवन में कुछ नया करने का प्रयत्न क्यों करेगा और इस प्रकार सृष्टि असंतुलित हो जाएगी, सम्पूर्ण क्रिया-विधि अस्त-व्यस्त हो जाएगी, परन्तु यह कहना उपयुक्त नहीं होगा क्योंकि स्वयं भगवान महात्मा बुद्ध ने कहा कि सभी व्यक्ति भिक्षु नहीं बन सकते। ‘आष्टांगिक-मार्ग’ के सम्यक्-दृष्टि, सम्यक्-संकल्प, सम्यक्-कर्मान्त, सम्यक्-वाक् व सम्यक्-समाधि भिक्षु वर्ण के लिए निर्मित थे।

जबकि सम्यक्-आजीव, सम्यक्-व्यायाम व सम्यक्-स्मृति गृहस्थ जीवन के लिए अनुपलनीय बताए थे।<sup>22</sup> सम्यक्-आजीव व सम्यक्-व्यायाम करने से व्यक्ति स्वतः सम्यक् कर्म, वाक् व संकल्प को धारण कर लेता है।

वर्तमान में बढ़ती हिंसा, झूठ और बेईमानी, स्वार्थीपन के वातावरण में ‘आष्टांगिक-मार्ग’ अधिक सार्थक प्रतीत हो रहा है। इसे यह कहकर नहीं नकारा जा सकता कि इससे नवीन विकास व मनुष्य की कर्मठता बाधित होती है। भगवान महात्मा बुद्ध स्वयं अलौकिक प्रश्नों के जवाब पूछने पर मौन रहते थे। उनका मानना था कि इस लौकिक संसार के दुःखों को ही दूर करो, उन प्रश्नों या वस्तुओं की खोज में मत उलझो, जो प्रत्यक्ष नहीं है। इसलिए कहा जा सकता है कि वर्तमान में व्यक्ति या राष्ट्र की बढ़ती एकाधिकार स्थापित करने की भावना को संतुलित करने में ‘आष्टांगिक-मार्ग’ अहम् भूमिका निभा सकता है।

### प्रासंगिकता

महात्मा बुद्ध की नैतिक शिक्षाओं की आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है जितनी की तब थी। महात्मा बुद्ध द्वारा बताये गये नैतिक कर्तव्य ही समाज को कल्याणोन्मुख कर सकते हैं। आज के वातावरण में व्यक्ति दैवीय आपदाओं से तो कुछ सीमा तक सुरक्षित है, परन्तु उसे यदि खतरा है तो एकमात्र पथभ्रष्ट मनुष्य से। विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने बहुत अधिक प्रगति की है। जिसमें उपयोगी वस्तुओं के साथ-साथ विभिन्न तरह के घातक हथियार भी हैं, जैसे परमाणु बम व जैविक हथियार। जबकि उतनी ही गति के साथ नैतिक मूल्यों का विकास नहीं हुआ। आइंस्टीन ने कहा है कि आज का मनुष्य उस विशाल दैत्य के समान है जिसका एक हाथ दुसरे हाथ की तुलना में बहुत अधिक बढ़ गया है अर्थात् वैज्ञानिक प्रगति में तो बहुत वृद्धि हुई परन्तु नैतिक मूल्यों की उतनी ही मात्रा में अभिवृद्धि नहीं हुई। इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करें तथा क्रोध और ईर्ष्या का त्याग करें अन्यथा सम्पूर्ण मानवता अभिशप्त हो जाएगी। सूचनाओं का संग्रह करने की बजाय ज्ञान को विकसित करना चाहिए अन्यथा मानवजगत का अस्तित्व बचाए रखना मुश्किल हो जायेगा।<sup>23</sup> बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ सरल, व्यवहार्य, कल्याणकारी एवं भूतल को स्वर्ग बना देने वाला है। आज के सामाजिक परिवेश में जहां जात-पात और सम्प्रदाय का विषैला प्रदूषण फैला हुआ है वहां भगवान महात्मा बुद्ध का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ न केवल एक व्यक्ति या राष्ट्र के लिए अपितु सम्पूर्ण विश्व समुदाय के लिए उपयोगी होगा। ‘आष्टांगिक-मार्ग’ मनुष्य के आचरण को शुद्ध बनाता है, उसका चरित्र अत्यंत उज्ज्वल और निष्कलंक होता है।<sup>24</sup> महात्मा गांधी ने भी ‘अहिंसा परमो धर्मः’ का पालन करते हुए देश को आजादी दिलवाई

और आज अहिंसा का मूल्य अंतराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित होने लगा है।

बौद्ध दर्शन लौकिक जगत की समस्याओं पर ध्यान देता है अर्थात् जो यथार्थ रूप में दिखाई देता है न कि उन प्रश्नों के हल करने पर जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। अतः यहां पर बौद्ध दर्शन कहीं न कहीं प्रयोगवाद के समकक्ष दिखाई पड़ता है। बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ का प्रत्येक चरण एक दूसरे से क्रमबद्ध रूप से जुड़ा हुआ है जो अंततः निर्वाण की ओर ले जाता है। वर्तमान में यदि कोई मनुष्य किसी एक मार्ग को अपना ले जैसे सम्यक् कर्मान्त तो वह मनुष्य कर्मों के साथ-साथ सत्य, अहिंसा और आजीविका को स्वतः ही धारण कर लेगा।<sup>195</sup> बढ़ते आतंकवाद, जमाखोरी, चोरी, अहिंसा, तानाशाही, गरीब और अमीर के बीच बढ़ती खाई इर्ष्या व द्वेष की भावना, साम्प्रदायिकता जैसी समस्याओं का हल करने के लिए महात्माबुद्ध द्वारा दिया गया ‘आष्टांगिक-मार्ग’ बहुत उपयोगी हो गया है। आज इस बात पर बल दिया जा रहा है कि शिक्षण संस्थानों में नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। इससे प्रश्न यह उठता है कि हमारा नैतिक स्तर इतना गिर चुका है कि नैतिक मूल्यों को पढ़ाने की आवश्यकता महसूस हो रही है। इन परिस्थितियों में हमें सोचने का तरीका बदलने की आवश्यकता है सिर्फ बोलने से उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती। बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ व्यक्ति के मानसिक पक्ष से जुड़ा हुआ है जो व्यक्ति के विचारों को शुद्ध बनाने पर केन्द्रित है। इसलिए वर्तमान समस्याओं के निराकरण में ‘आष्टांगिक-मार्ग’ एक उपयोगी माध्यम साबित हो सकता है।

**निष्कर्ष :** उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने बहुत अधिक प्रगति की है। जिसमें उपयोगी वस्तुओं के साथ-साथ विभिन्न तरह के घातक हथियार भी हैं, जैसे परमाणु बम व जैविक हथियार। जबकि उतनी ही गति के साथ नैतिक मूल्यों का विकास नहीं हुआ। आइंस्टीन ने कहा है कि आज का मनुष्य उस विशाल दैत्य के समान है जिसका एक हाथ दुसरे हाथ की तुलना में बहुत अधिक बढ़ गया है अर्थात् वैज्ञानिक प्रगति में तो बहुत वृद्धि हुई परन्तु नैतिक मूल्यों की उतनी ही मात्रा में अभिवृद्धि नहीं हुई। इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करें तथा क्रोध और ईर्ष्या का त्याग करें अन्यथा सम्पूर्ण मानवता अभिशप्त हो जाएगी। बौद्ध दर्शन का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ सरल, व्यवहार्य, कल्याणकारी एवं भूतल को स्वर्ग बना देने वाला है। आज के सामाजिक परिवेश में जहां जात-पात और सम्प्रदाय का विषैला प्रदूषण फैला हुआ है वहां भगवान महात्मा बुद्ध का ‘आष्टांगिक-मार्ग’ न केवल एक व्यक्ति या राष्ट्र के लिए अपितु सम्पूर्ण विश्व समुदाय के लिए उपयोगी होगा।

**संदर्भ:**

1. गुप्ता, राजेश चन्द्र, बौद्ध दर्शन का प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रभाव: वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में इसकी उपादेयता, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010, पृ. 186-187
2. जैन, धर्मचन्द्र, बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त, बौद्ध अध्ययन केन्द्र, जोधपुर, 2009, पृ. 16
3. वही, पृ. 19
4. वही, पृ. 20
5. प्रशाद, शीतल, ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ जैनियम एंड बुद्धियम, श्रीसतगुरु पब्लिकेशन, दिल्ली, 1982, पृ. 120
6. जैन, धर्मचन्द्र, पूर्वउद्धृत, पृ. 21
7. वही, पृ. 21-22
8. गूगल सर्च इंजन
9. चौधरी, अंग्रेज, एस्सेयज ऑन बुद्धियम एंड पाली लिटरेचर, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2012, पृ. 58
10. गुप्ता, राजेश चन्द्र, पूर्व उद्धृत, पृ. 175
11. जैन, धर्म चन्द्र, पूर्वउद्धृत, पृ. 22-23
12. वही, पृ. 23-24
13. गुप्ता, राजेश चन्द्र, पूर्वउद्धृत, पृ. 180
14. मुनि नथमल, जैन दर्शन : मनन और मीमांसा, पृ. 279
15. जैन, जिनेन्द्र जैनविद्या एवं बौद्ध अध्ययन के आयाम, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ. 315-327
16. गूगल सर्च इंजन
17. प्रशाद, शीतल, पूर्व उद्धृत, पृ. 192-196
18. चौधरी, अंग्रेज, पूर्वउद्धृत, पृ. 59
19. गुप्ता, राजेश चन्द्र पूर्वउद्धृत, पृ. 184-186
20. ओझा, नाथ भुवनेश्वर, भारतीय दर्शन: समकालीन संदर्भ, सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 103-105
21. स्तुदेबकर, बेंजामिन, ए क्रिटिकुए ऑफ बुद्धियम, पृ. 1-3
22. गुप्ता, राजेश चन्द्र पूर्वउद्धृत, पृ. 174-175
23. चौधरी, अंग्रेज, पूर्वउद्धृत, पृ. 59-60
24. ओझा, नाथ भुवनेश्वर, पूर्वउद्धृत, पृ. 103
25. चौधरी, अंग्रेज, पूर्वउद्धृत, पृ. 34-36